श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

साँवरिया के आगे, म्हारे गिरधारी के आगे,
मैं ऊभो कर जोड़, म्हारी गाड़ी तो संभाले रे,
म्हारो राजा रणछोड़.....

थारे भरोसे साँवरा, नानी ने परणाई,
थारो ही भरोसो अब, मायरे री बेला आई।
भात भरण न चाल्या तू आजा मोहन दौड़,
म्हारी गाड़ी न संभालो , म्हारा राजा रणछोड़।
साँवरिया के आगे मैं तो, ऊभो कर जोड़,
म्हारी गाड़ी तो संभाले रे, म्हारो राजा रणछोड़.....

साधू संत सागे म्हारे, गद्दी ना रजाई,
घनघोर बन में, इब तो रात घिर आई,
गाड़ी म्हारी टूटी, तू आजा प्यारा दौड़,
म्हारी गाड़ी न संभालो रे, म्हारा राजा रणछोड़।
साँवरिया के आगे मैं तो, ऊभो कर जोड़,

म्हारी गाड़ी तो संभाले रे, म्हारो राजा रणछोड़.....

नरसी रा काज संवारया म्हान मत बिसराओ ,
जीवन की गाड़ी म्हारी पार लगाओ।
म्हारा दुखड़ा न हटाकर इम भक्ति दीजो जोड़
म्हारी गाड़ी तो संभालो म्हारा राजा रणछोड़।
साँवरिया के आगे मैं तो ऊभो कर जोड़,
म्हारी गाड़ी तो संभाले रे, म्हारो राजा रणछोड़.....

॥ गीतम् 14 ॥

(अथ चतुर्दशप्रबन्धो वसन्तरागेण एकतालीताले गीयते)

स्मरसमरोचितविरचितवेशा ।
गलितकुसुमदलविलुलितकेशा ॥
कापि चपला मधुरिपुणा
विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ 1॥

हरिपरिरम्भणवलितविकारा ।
कुचकलशोपरि तरलितहारा ॥ 2॥ कापि चपला मधुरिपुणा

विचलदलक लिताननचन्द्रा ।
तदधरपानरभसकृततन्द्रा ॥ 3॥ कापि चपला मधुरिपुणा

चञ्चलकुण्डलदलितकपोला ।
मुखरितरसनजघनगतिलोला ॥ 4॥ कापि चपला मधुरिपुणा

दयितविलोकितलज्जितहसिता ।
बहुविधकूजितरतिरसरसिता ॥ 5॥ कापि चपला मधुरिपुणा

विपुलपुलकपृथुवेपथुभङ्गा ।
श्वसितनिमीलितविकसदनङ्गा ॥ 6॥ कापि चपला मधुरिपुणा

श्रमजलकणभरसुभगशरीरा ।
परिपतितोरसि रतिरणधीरा ॥ 7॥ कापि चपला मधुरिपुणा

श्रीजयदेवभणितहरिरमितम् ।
कलिकलुषं(ञ्) जनयतु परिशमितम् ॥ 8॥ कापि मधुरिपुणा